मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 3, अंक 60, मई(प्रथम), 2019

रजनी

(भाग-5)

जनकदेव जनक

गतांक से आगे:

इंस्पेक्टर रवि आज काफी व्यस्त और प्रसन्नचित दिखाई पड़ रहे थे. उनके लाडले पुत्र शशि का वर्थ डे पार्टी जो था. शशि अपने कमरे में शूट पहनने व संवरने में लगा हुआ था. इसी बीच उसकी निगाहें मेन गेट की ओर चली जाती, जैसे उसे किसी खास मेहमान के आने का इंतजार हो.

इंस्पेक्टर रवि अपने मेहमानों के खिदमत में जी जान से जुटे हुए थे. उनके सभी मित्र, शुभचिंतक और मेहमान आ चुके थे. फिर भी पार्किंग में गाड़ियों का आना जाना लगा हुआ था. बड़ा सा हॉल रंग बिरंगे बल्बो और चाइनिंज झालरों से जगरमगर कर रहा था. खाने पीने के लिए अलग अलग स्टॉल लगे हुए थे.जहां युवक-युवतियां अपनी मन पसंद लचीज का लुफ्त उठा रहे थे. रंगे महफिल के स्टेज पर कई जोड़े डीजे साउंड की लय और ताल पर झूम रहे थे. जिनमे अधिकतर शशि के कॉलेजियट थे. लेकिन अभी तक शशि महफिल से दूर था. कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा था. सभी दोस्त उसकी प्रतीक्षा में थे.

वहीं शशि के जन्म दिन पर उसकी प्रेमिका रजनी पहली बार आने वाली थी,जिसको लेकर वह काफी बेकरार था. वह सोच रहा था कि रजनी तो रातों की रानी है. उसे जब भी देखा दिन के उजाले में ,लेकिन आज उसे करीब से देखेगा और जी भरकर देखेगा. उसके मन की कली जो है. उसे ताज्जुब था कि एक ही नजर में उससे कैसे प्यार हो गया. न तो उसके साथ कभी पढा न बचपन बिताया. वह यही सोच सोचकर व्याकुल हुआ जा रहा था, अचनाक उसके डैडी इंस्पेक्टर रवि उसके कमरे में पहुंचे और शशि के कंधे पर हाथ रखा.

शशि चौक कर बोला, " अरे डैडी आप?"

" अरे बेटे, आज तुम्हारा वर्थ डे पार्टी है. तुम्हारे दोस्त और मेहनान तेरे इंतजार में है, एक तू है जो अपने आप में खोया हुआ है. कम से कम पार्टी में मेहमानों का ख्याल तो करो.''

" अभी आता हूं डैडी, लेकिन मम्मी तो अभी तक आई नहीं? उसे एक बार कॉल तो कीजिए!"

अचानक रवि साहब को कुछ ख्याल आया. वह तो बिल्कुल भूल ही गए थे. उनकी पत्नी प्रभा अभी तक दार्जिलिंग से नहीं लौटी थी, जबकि उन्हे सुबह 5 बजे आ जाना चाहिए था. 10 दिन पूर्व वह दार्जिलिंग गई थी.

" ठीक कहते हो, मै पता करता हूं. लेकिन तुम जल्द आ जाओ"

“ आप चलिए, मैं पहुंच ही रहा हूं. ”
इंस्पेक्टर रवि स्टेज पर पहुंचे और माइक हाथों में थामकर बोले, “ मेरे प्यारे दोस्तो और मेहमानों,आज मेरे पुत्र शशि का जन्म दिन है. आप सबका हार्दिक स्वागत है.
तब तक शशि जन्म दिन मनाने के लिए स्टेज पर पहुंच चुका था. उसे देखकर हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा. शशि का ड्रेस आज बिल्कुल बदला हुआ था. वह पाश्चात्य पोशाकों में हैंडसम लग रहा था, जो भी देखता उसे पेरिस का प्रिंस कहता.
शशि ने स्टेज के चारों तरफ अपनी नजरें दौड़ाई. सभी मेहमान और उसके दोस्त यथावत बैठे हुए थे.लेकिन वह नहीं आई थी, जिसका उसे बेसब्री से इंतजार था. उसने पुन: अपनी निगाहें एक एक व्यक्ति पर जमाई, लेकिन निराशा ही हाथ लगी. वह सोचने लगा कि उसका प्यार कहीं धोखा तो नहीं! नहीं नहीं वह ऐसा नहीं कर सकती.
रजनी उसकी प्रेयसी है. उसकी आत्मा है. बिना आत्मा के वह कैसे जी सकता है! उसके मन ने कहा कि वह जरूर आएगी. वह आती ही होगी. वह सोचते-सोचते अचानक उदास हो गया. महफिल की रौनकता उसे फीकी लगने लगी. दोस्तों की हंसी-ठिठोली उसे कांटे की तरह चुभने लगी. वह तो उसकी प्रतीक्षा में अपना बहुमूल्य समय बिताना चाहता था. लेकिन साध्य के बिना उसकी साधना निष्ठुर हो कर रह जाएगी क्या ?
“ अरे यार, इस खुशी के मौके पर यह खामोशी कैसी?” एक दोस्त ने चिल्लाकर उसे सचेत किया.
दोस्त की आवाज सुनकर वह अपने को संभाला और कहा,
“ यूंही मम्मी की आद आ गई. दार्जिलिंग से आज सुबह आ जाना था, लेकिन वे अभी तक नहीं पहुंच पाई है. मम्मी के वगैर महफिल फीका़-फीका लग रहा है. ” शशि ने अपनी गलती छुपाने के लिए सार्वजनिक झूठ बोला. लेकिन उसका अंत:करण कह रहा था कि दोस्तों ने उसकी चोरी पकड़ ली है.
उसने वर्थ डे मनाने के लिए मोमबतियों को बुझाया और केक काटा. इंस्पेक्टर रवि ने शशि को केक खिलाया. उसके साथ ही पश्चिमी धुनों पर महफिल में आए जोड़े थिरकने लगे. एक दूसरे की कमर में हाथ डाले ताल पर कदम से कदम मिलाने लगे. रंगबिरंगी रोशनी में नहाये जोड़ों के चेहरे फूलों की तरह खिला हुआ था. सभी जोड़ों को थिरकते देखकर शशि एक बार फिर गमगीन हो गया. उसे लगा कि अगर उसकी प्रेयसी रहती तो वह भी उसके साथ अपना मन बहलाता. उसे देखकर वह फूले नहीं समाती. इस जन्म दिन पर उसका सपना अधूरा रह गया. अचनाक उसका मन उचट गया.
वह सोचने लगा, अगर आज वह नहीं आई तो वह फिर कभी उससे मिलने नहीं जाएगा. उसको सदा-सदा के लिए भूल जाएगा. प्यार का रिश्ता कितना गिर गया है उसे अब समझ में आया. प्यार शब्द को ऐसे लोग ही बदनाम कर रहे है, जो प्यार मुहब्बत के नाम पर व्यसाय कर रहे हैं. किसी के दिल से खेलना कितना दुखदाई है. दिल टूटने के साथ कितने प्रेमी पागल

हो जाते है. वह इसी उधेड़बुन में किसी पंछी के मानिंद फंसा हुआ था कि युवतियों का झुंड उसके पास आ पहुंचा और नृत्य करने के लिए उससे आग्रह करने लगा.

वह न चाहते हुए भी एक युवती के साथ थिरकने लगा. मंच पर शशि के थिरकते ही महफिल में जान आ गई. हर तरफ उत्साह, उमंग और उल्लास का माहौल हो गया. विदेशी धुन अब परिवर्तित होकर देशी हो गया था. उसी समय फिल्म नागिन का गीत ' मन डोले मेरा तन डोले कौन बजाए बांसुरिया....दिल का गया करार रे...'.बजने लगा. उसकी घुन पर कदम ताल मिलाते हुए युवा जोड़ी थिरकने लगी. हर तरफ मस्ती और मदहोशी में युवा झूमने लगे. उनका अंग अंग नागिन की तरह लचकने लगा.

यकायक डीजे साउंड रूक गया. आरकेस्ट्रा के साज थर्थरा उठे. मंच पर थिरक रहे जोड़ों के पांव जहां के तहां ठमक गए. जैसे अचानक उनके पैरों में बेड़ियां बंध गई हों.

सहसा इंस्पेक्टर रवि मंच पर आए और माइक पर बोले, " मेरे प्यारे दोस्तो और मेहमानो, बीच में कार्यक्रम रद्द करने का मुझे खेद है...शशि की मम्मी का एक्सीडेंट हो गया है....." इतना बोलने के बाद वे लड़खड़ाकर मंच पर ही गिर पड़े. तुरंत कार्यक्रम में शामिल चिकित्सक उनके पास पहुंचे.

इंस्पेक्टर रवि का पल्स आदि चेकअप किया. उनकी बायी छाती के नीचे तलहथी से दबाकर कृत्रिम उपचार किया. वे तुरंत उठ खड़े हुए और मुस्तैदी के साथ शशि को गाड़ी निकालने का इशारा किया.

शशि अपने डैडी को देखकर हैरान रह गया. सोचा वे कितने हिम्मती व साहसी व्यक्ति है. लगता है फौलाद का जिगर है. दिल का दौरा पड़ने पर भी उनके चेहरे पर सिकन तक नहीं आई. आखिर एक पुलिस ऑफिसर जो ठहरे. जब विपत्ति खुद पर आती है तो पत्थर दिल को भी हिला देती है लेकिन मम्मी के एक्सीडेंट की खबर के बाद शॉक लगना लाजिमी था.

देखते ही देखते कई वाहन सड़क पर दौड़ाने लगे. वाहनें तेजी के साथ आगे भागती जा रही थी और शहर का कोलाहल पीछे छुटता जा रहा था.

क्रमश:

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें